Criteria 6.6 Seminars, Workshops, Conferences and Trainings organized by the institution

(Verifiable from the data collected through Google Form hard copies with IQAC)

International level

National level

State level

प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए पर्यावरण संरक्षण जरूरी

• दाड़लाघाट में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में जुटे शिक्षाविद व शोधार्थी

• 10 तकनीकी सत्र में 100 से अधिक शोध पत्र किए प्रस्तुत

संवाद सूत्र, दाड़लाघाट : पर्यावरण प्रदूषण की समस्या आज संपूर्ण विश्व में विकराल रूप धारण कर चुकी है, इस समस्या से निजात पाने के लिए सभी को पर्यावरण संरक्षण करना होगा। यह बात सरदार पटेल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. देवदत्त शर्मा ने अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस पर सोमवार को राजकीय महाविद्यालय दाड़लाघाट में कालेज व सोशियोलाजिकल सोसायटी आफ हिमाचल प्रदेश के संयुक्त तत्वावधान में पहाड़ों में विकास मुद्दे, चुनौतियां व समाधान विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में कही। उपरोक्त सभी मुद्दों पर चर्चा के लिए देश-विदेश के शिक्षाविद, विज्ञानिक, साहित्यकार व शोधार्थी शामिल हुए। सम्मेलन के पहले दिन 10 तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। इनमें 100 से अधिक शोध आलेख प्रस्तुत किए गए।

सम्मेलन के मुख्य वक्ता इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय दिल्ली के प्रो. क्विनी प्रधान ने कहा कि भारत के सभी पर्वतीय राज्य जलवायु परिवर्तन की समस्या से अछूते नहीं हैं। पंजाब विश्वविद्यालय के प्रो. गुरमीत सिंह ने साहित्य व पर्यावरण के समन्वय पर चर्चा की। उन्होंने कबीर की काव्य से लेकर जयशंकर प्रसाद के काव्य का उदाहरण देते हुए कहा कि समकालीन साहित्यकार किस भांति पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्य कर रहे हैं। उन्होंने हिमाचल के साहित्यकार एसआर हरनोट का उदाहरण देते हुए कहा कि हिमाचलवासी भाग्यशाली हैं कि इस राज्य में हरनोट जैसे साहित्यकार पर्यावरण संरक्षण के लिए साहित्य सृजन कर रहे हैं।

प्राचार्य डा. रुचि रमेश ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में स्थित महाविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन होना गर्व का विषय है। उन्होंने कहा कि प्रस्तुत शोध आलेख भविष्य में आपदा नियंत्रण नीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। सम्मेलन की परिचर्चा में शामिल किए गए सभी विषय वर्तमान समय में प्रासंगिक हैं और आमजनों से लेकर सरकारी तंत्र में जागरूकता का प्रसार प्रचार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

देश-विदेश से आए आगंतुकों को हिमाचली संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए सांस्कृतिक संध्या का आयोजन भी किया गया। सांस्कृतिक संध्या में छात्र छात्राओं द्वारा पहाड़ी नाटी और गिद्दा प्रस्तुत किया गया।

दाड़लाघाट कालेज में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में मौजूद विशेषज्ञ • जागरण

विकास की भेंट चढ़ रहे हैं पहाड़ : देवदत्त

दाड़लाघाट में अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस पर दो दिवसीय सम्मेलन शुरू

संवाद न्यूज एजेंसी

दाड़लाघाट (सोलन)। अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस पर दाड़लाघाट में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें पहाड़ी क्षेत्र पारिस्थितिक तंत्र के विकास की भेंट चढ़ने पर चिंता व्यक्त की।

पहले दिन के कार्यक्रम में पर्यावरण बदलाव समेत 10 तकनीकी सत्रों में पहाड़ों और पर्यावरण के बचाव पर मंथन किया गया। इन सत्र में 100 से अधिक शोध आलेख प्रस्तुत किए गए।

सम्मेलन में सरदार पटेल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. देवदत्त शर्मा ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। उन्होंने कहा कि विकास को लेकर हो रही खोदाई से पहाड़ कमजोर हो रहे हैं।

सम्मेलन में मुख्य वक्ता इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय दिल्ली के प्रो. क्विनी प्रधान ने कहा कि भारत के सभी पर्वतीय राज्य में पर्यावरण बदलाव की समस्या से अछूते नहीं है। लगातार लिखी जा रही विकास की गाथा में पहाड़ पेड़-पौधे भेंट चढ़ रहे हैं। पंजाब विश्वविद्यालय से प्रो. गुरमीत सिंह ने साहित्य और पर्यावरण के समन्वय की विस्तार से चर्चा की।

उन्होंने कबीर से लेकर जयशंकर प्रसाद के काव्य का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि समकालीन साहित्यकार पर्यावरण संरक्षण के लिए लेखन से कार्य कर रहे हैं। कार्यक्रम में कॉलेज प्राचार्य रुचि रमेश ने कहा कि दाड़लाघाट महाविद्यालय ग्रामीण क्षेत्र में स्थित महाविद्यालय है। इस महाविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन का आयोजन होना पूरे क्षेत्र वासियों के लिए गर्व का विषय है।

दाड़लाघाट में आयोजित सम्मेलन में मौजूद विशेषज्ञ। -संवाद

पहाड़ पर बसती है दुनिया की 15 फीसदी आबादी : जिस्टू

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला में अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस मनाया गया। इस मौके पर संस्थान के विस्तार विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जगदीश सिंह ने कहा कि पहाड़ स्वच्छ जल का स्रोत है इसलिए इनका संरक्षण बेहद महत्वपूर्ण है।

उन्होंने कहा कि इस साल अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस का थीम "पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करना" है। इसके लिए ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की नीति बेहद जरूरी है। इस अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ. वनीत जिस्टू ने बताया कि पहाड़ दुनिया की 15 फीसदी आबादी का घर है। दुनिया की लगभग आधी जैव विविधता वाले हॉट स्पॉट पहाड़ों में रहती है। उन्होंने लद्दाख के द्रोकपा, ब्रोकपा और मोरे प्लेन्स के चांगपा समुदाय का उदाहरण देकर उनके पर्वतीय पारिस्थितिकी के संरक्षण में योगदान पर चर्चा की। ब्यूरो

संस्थान के निदेशक डॉ. संदीप शर्मा ने बताया कि पर्वतीय क्षेत्र जैव विविधता के भंडार हैं और यह जीवन और पर्यावरण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि भारत में प्राचीन काल से ही गोवर्धन पूजा और पवित्र पहाड़ों की धार्मिक यात्रा और परिक्रमा होती रही है। हिमाचल के श्रीखंड महादेव, मणिमहेश और किन्नर कैलाश यात्रा इसके प्रमाण हैं। उन्होंने शिमला और सोलन में बहने वाली हिमाचल की सबसे प्रदूषित नदी अश्वनी खड्ड की स्थिति पर चिंता व्यक्त की। ब्यूरो